BA. Part I (H)
Paper II

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (G.T)
Department of Sociology
VSJ college Rajnagar

सामाजिक तथ्य (Social Facts - Emile Durkheim) :

दुर्खाइम ने अपनी पुस्तक The Rules of sociological method में सामाजिक तथ्य के सिद्धान्त की व्याख्या की है। दुर्खाइम द्वारा प्रस्तुत पद्धतिशास्त्र सामाजिक तथ्य की अवधारणा से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। दुर्खाइम ने सामाजिक तथ्य को आनुभविक अध्ययन के लिए आधार माना, जिससे समाज का वस्तुनिष्ठ अध्ययन सुनिश्चित हो सके।

दुर्खाइम की समाजशास्त्रीय अवधारणा सामाजिक तथ्यों के सिद्धान्त पर केन्द्रित है। अन्य विज्ञानों के अनुरूप समाजशास्त्र एक वस्तुनिष्ठ विज्ञान है, और इसका विषय सामाजिक तथ्य है। सामाजिक तथ्य को दुर्खाइम ने एक ऐसी वस्तु के रूप में स्वीकार किया है जो वैज्ञानिक अध्ययनों का वास्तविक आधार है। केवल उसी विशेषता को हम 'वस्तु' कह सकते हैं जिसका वास्तविक रूप से अवलोकन किया जा सकता है।

दर्खीइम ने सामाजिक तथ्य को परिभाषित करते हुए लिखा है, "सामाजिक तथ्य, क्रिया करने, सोचने तथा अनुभव करने के तरीके हैं, ये व्यक्ति से बाहर होते हैं तथा इनमें दबाव की शक्ति होती है इसी कारण ये व्यक्ति को नियंत्रित करते हैं।"

स्पष्ट है कि सामाजिक जीवन में हम विभिन्न प्रकार के विचारों, अनुभवों या क्रियाओं के रूप में जो भी व्यवहार करते हैं उन्हें सामाजिक तथ्य तभी कहा जा सकता है जब उसका वास्तविक रूप से अवलोकन किया जा सकता है।

सामाजिक तथ्यों की पहचान (Identification of social facts) :- दर्खीइम ने समाजशास्त्र को सामाजिक तथ्य की वस्तुनिष्ठता के आधार पर व्याख्या की है। सामाजिक तथ्यों की पहचान इस दृष्टिकोण से सम्भव है—

(1) सामाजिक तथ्य प्राकृतिक तथ्यों से भिन्न है।

(2) सामाजिक तथ्य जैविकीय नहीं है अर्थात् ये आनुवंशिक वास्तविकताओं तथा मनोवेगों की सीमा से बाहर होते हैं।

(3) सामाजिक तथ्यों का वितरण समाज में समान रूप से होता है। किसी व्यवस्थित समाज में तथ्य को इतने बड़े पैमाने पर स्वीकार कर लिया जाता है कि उसे समाज की विशेषता ही मान लिया जाए। जैसे मतदान, शिक्षा नौकरी आदि ऐसी ही प्रक्रियाएं है।

(4) सामाजिक तथ्य, व्यवहार, विचारों व भावनाओं के सामूहिक रूप से सम्बद्ध है। उनका यह स्वरूप निश्चित और सामान्य ढंग अपना लेता है।

सामाजिक तथ्यों की विशेषताएं :- सामाजिक तथ्यों की विशेषताएं इस प्रकार है —

(1) बाह्यता (Exteriority) :- सामाजिक तथ्यों की और अपनी स्पष्ट सामाजिक विशेषताएं तथा निर्धारक है जिन्हें जैविकीय तथा मनोवैज्ञानिक स्तर पर व्याख्या की तरह नियंत्रित नहीं किया जा सकता। सामाजिक तथ्य दुर्खीम के अनुसार व्यक्ति की चेतना से बाहर अस्तित्वमान होती है। उदाहरणार्थ - धर्म, जाति आदि परम्परा सभी व्यक्ति से बाहर है। व्यक्ति का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

② बाध्यकारी (Constraint) :- सामाजिक तथ्य व्यक्तियों पर एक दबाव या बाध्यता के रूप में कार्य करते हैं। दुर्खीम के अनुसार समाज के नियम को मानना एक नैतिक जिम्मेदारी है, इस तरह समाज हमसे बाहर होते हुए भी हमारे अंदर ही है। सा० तथ्य की पहचान इस रूप में सम्भव है कि यह स्वयं व्यक्ति के ऊपर आरोपित करने की शक्ति रखता है। उदाहरणार्थ विश्वास, कानून या शिक्षा की संस्थाएं।

③ स्वतंत्र (Independence) :- सामाजिक तथ्य किसी व्यक्ति या समुच्चय या व्यक्ति समूह के जीवन से कहीं अधिक स्वं स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखते हैं। सा० तथ्य व्यक्ति की व्यक्तिगत विशेषताओं या गुणों स्वं सार्वभौमिक मानवीय प्रकृति से अलग स्वं स्वतंत्र अस्तित्व रखते हैं। उदाहरणार्थ — विश्वास, सामूहिकचेतना, धर्म, जाति आदि।

④ सामान्यता (Generality) :- सामाजिक तथ्यों की यह विशेषता है कि वे सम्पूर्ण समाज या एक निश्चित सामाजिक पर्यावरण में सामान्य रूप से स्वीकृत व्यवहार प्रतिमान या जाति के नियम, बहुपतिविवाह (जो कि एक निश्चित क्षेत्र में सामान्यतया स्वीकृत तथ्य है, आदि।